पंत : प्रकृति चित्रण

अंजना कुमारी
अध्यापिका
महात्मा गाँधी हाईस्कूल
आसनसोल, पश्चिम बंगाल, भारत

प्रकृति के सर्वाधिक समर्थ शैलीकार पंत आज जब कीर्ति शेष रह गए हैं तब भी उनकी स्मृति छटा की प्रथम किरण प्रकृति के नैसर्गिक, उज्जर्वसित स्वरूप के बीच ही प्रतिभासित होती है। आधुनिक हिन्दी के संभवतः वह प्रथम कवि हैं जिनका पश्चिम प्रकृति से आरंभ होकर विश्व प्रकृति में समाप्त होता है। प्रकृति के सभी दृश्य–अदृश्य घटाओं का अंकन उनकी कविताओं में है। आज भी अनेक आलोचक प्रकृति वर्णन, प्रमुख छाया–काल को उनकी रचनाओं का स्वर्णकाल मानते हैं। उनकी काव्य–प्रेरणा की उद्‌गम स्थली भी प्रकृति ही है, ऐसी स्वीकृति उन्होंने अपने विभिन्न निबन्ध एवं व्याख्यानों में दी है – ''कविता करने की प्रेरणा मुझे सबसे पहले प्रकृति निरीक्षण से मिली, जिसका श्रेय मेरी जन्मभूमि कुर्मांचल प्रदेश को है।'' तथा ''नैसर्गिक सौन्दर्य की प्रेरणा ही मेरी दृष्टि में वह मूल

शक्ति थी, जिसने मेरे एकान्त प्रिय मन को काव्य सृजन की ओर उन्मुख किया और आज भी मेरे शब्दों के कुंजो से प्रकृतिक सौन्दर्य का मर्मर फूट पड़ता है इत्यादि।''

कवि की आरंभिक रचनाओं में प्रकृति के विभिन्न आदान ही काव्य रचना का निमित्त है। भारत भूमि प्रकृति नहीं की रंगशाला है और कवि पंत की रचनाओं में इसके भ्रू–निक्षेपों और पद–क्षेपों की विभिन्न भंगिमाओं का आकलन है। छायाकालीन प्रकृति के पूर्ण सौष्ठव का निदर्शन पंत की कृतिओं में उपलब्ध है। इस प्रसंग में डॉ0 कुमार विमल ने लिखा है ''छायाकाल की आरंभिक प्रकृति कविताएँ वास्तविक प्राकृतिक सात्वर्य काल में रची गई है। इसलिए इन कविताओं में प्रकृति की कथ्य और अभिव्यंजना दोनों का उपकरण है। इतना ही नहीं, इनमें प्रकृति निरीक्षण पर निर्भर भावनाओं से छनकर जो विचार आए हैं, वे मुख्यतः प्रकृतिपरक दार्शनिकता से सम्बद्ध है। पंतजी के प्रकृति काव्य की यह बी एक विशेषता है कि इनके द्वारा उकेरी गई प्रकृति के उग्र कठोर रूप ने आकृष्ट नहीं किया। दूसरी बात यह है कि कवि ने छायाकाल में प्रकृति को एक स्वतन्त्र सजीव सत्ता रखने वाली नारी के रूप में चित्रित किया है।''

पंतजी की सूक्ष्म दृष्टि ने प्रकृति के वाह्य स्वरूप की एक–एक भंगिमा को निरखा है साथ ही उसके आंतरिक सौन्दर्य में एक सूक्ष्म चेतना के स्पन्दन को भी अनुभव किया है। अतः प्रकृति

वर्णन के साथ–साथ कवि को अपनी भावनाओं के प्रदर्शन का भी अवसर प्राप्त हुआ है। प्रकृति के अक्षय रंग कोशों पर जहाँ पतं अत्यन्त अभिभूत हैं, वही उसका असंतुलित स्वरूप उन्हें ग्राह्य नहीं है। प्रकृति की प्रश्नत हरीतिमा में पंत ने कहीं माँ के ममत्व का अनुभव किया तो कहीं सहचरी की स्नेह सुधा का पान किया, कहीं अज्ञात के रहस्यमय संकेतों को ग्रहण किया तो कहीं बालसुलभ चापल्य से पुलकित हुए। प्रकृति के ज्ञात–अज्ञात, चेतन–अचेतन, क्रियाकलापों पर वे विस्मर्य विमुग्ध हैं और उसके रहस्योद्घाटन के लिए जिज्ञासु भी। उनकी यही मनोवृत्ति छायावाद के सर्वात्मवादी भाव–दर्शन के रूप में अभिव्यंजित हुई है जिसे ''भावात्मक रहस्यवाद'' की संज्ञा भी दी गई। प्रकृति–वर्णन में पंत ने कहीं कल्पना मूलक अलंकृत छवि का चित्रण किया है तो कहीं शशिकला की सी निरालंकृत सरलता के दर्शन किये हैं।

पंत ने प्रकृति के सौन्दर्य में नारी रूप का आभास पाया। उन्होंने कहीं प्रकृति में नारी सुलभ कोमलता और सौन्दर्य का चित्रण किया तो कहीं नारी में प्रकृति के नैसर्गिक गुणों का समावेश किया। इस प्रकार पंत की प्रकृति और नारी चित्रण अभिन्न होकर पाठकों को आनंदाभिभूत करते रहें।

कहीं पंत ने प्रकृति का चित्रण आलंबन रूप में किया है तो कहीं वही उद्दीपन बनकर आई है। कहीं–कहीं उसका मानवीकरण

कर उसे उपदेशिका के रूप में भी चित्रित किया गया है। परिवेश के अनुरूप हृदय में उत्पन्न एक–एक भाव–रेखाओं की प्रतिच्छाया पंत को प्रकृति के अंचल की लहरों में दीख पड़ती है। पंत के प्रकृति चित्रण में ''वर्ड्सवर्थ'' का ''शैली'' की चित्रात्मकता एवं ''कीट्स'' की सप्राण गंधवह रंग सज्जा की अप्रतिम छटा उद्भासित होती है।